भजन

तर्ज– आज क्यों हम से पर्दा है

आज क्यूं हमसे दूरी है–2

1– तेरे ही साथ धनी रहते थे,इश्क की बातें सदा कहते थे
ये कैसी बात तूने उपजाई,खेल की बात मन में क्यूं आई,
नहीं जाना था माया क्या है,सच और झूठ की छाया क्या है
ये कैसा खेल तूने दिखलाया,झूठ ही झूठ यहां दर्शाया

2– मोह का पर्दा यहां निराला है,खुदी का हरसूं बोलबाला है
भरम की बाजी में हैं भरमाए,कर्म की जाली में सब उलझाये
काल के फंदे में सब डोल रहे,माया के बस में होकर बोल रहे

3–हुकम को हुकम देदो आने का,अपने चरणों में लेके जाने का
साहेबी तेरी सबसे आला है,धनी दुनियां से तूं निराला है
अपने चरणों की रोशनी दे दे,प्यार को नई जिंदगी दे दे
तब तो जानेंगे हमसे नाता है,धाम से तूं हमे बुलाता है

4–अर्ज सुनके पियाजी मुस्काये,बात ऐसी क्यों मन में तुम लाये
खेल मांगा था मैंने दिखलाया,माया के खेल में है भिजवाया
साथ आया हूँ लेके जाऊंगा,जुदा अपने से कर ना पाऊंगा
मेरा दीदार मेरी वाणी है,जिसमें लिखी सभी निशानी है
मेरे वजूद पर तुम मत जाओ,मेरी आवाज को मन में लाओ
फिर नहीं दूर मुझको पाओगे,पास बैठा हूं मान जाओगे
देर कुछ भी नहीं है जाने की,राह देखूं तुम्हारे आने की
फिर–फिर ना कोई तुमसे दूरी है–2